विदर्भ स्वाभिमान

संपादक - सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे

9423426199/8855019189.

❖ अमरावती, गुरूवार 19 से 25 दिसंबर 2024 ❖वर्ष :15 ❖ अंक- 26 ❖ पृष्ठ 8 ❖ मूल्य - 4/- पोस्टल रजि.नं ATI/RNP/268/2022-2024 ❖डाक : शुक्रवार-शनिवार

बाबूजी के आदर्श विचार

खुशियां के कुछ टिप्स

हर घर में खुशी और तनाव के लिए एक घटक अत्याधिक जिम्मेदार रहता है. जिन घरों में महिलाओं में समझदारी होती है, अहंकार नहीं होता है, वहां सदैव खुशियां रहती हैं. लेकिन जहां बड़प्पन की भावना होती है, वहां तनाव होता है. आप घर की खुशियों का सदैव कारण बनने का प्रयास करें.

पेज नंबर 2

एकता का अभाव बन रहा है अमरावती जिले के लिए नासूर

पेज नं.2

जीवन का असली आनंद तो गांवों में ही मिलता है, गांव से नाता जोड़ें

पेज नं.4

सहकारिता क्षेत्र की शान है अभिनंदन बैंक की अर्थसरिता

पेज नं. 8

जिले के विकास का हो रहा है सत्यानाश, जनहित पर अहंकार है भारी, विकास में पिछड़ा

धर्म, मानवता और संस्कारों को बढ़ावा देने वाला, पूरी तरह से सकारात्मक खबरों को प्राथमिकता देने वाला देश का एकमात्र हिंदी साप्ताहिक अखबार

लड़ाई मंत्री पद नहीं, बल्कि अस्मिता की है

छगन भुजबल समर्थकों ने किया अजीत पवार के बंगले पर प्रदर्शन महायुति का त्याग कर सकते हैं पूर्व मंत्री छगन भुजबल

विदर्भ स्वाभिमान, 18 दिसंबर

मुंबई/अमरावती-राज्य मंत्रिमंडल का विस्तार भले ही हो गया है लेकिन अभी भी मंत्रिमंडल को लेकर सब कुछ ऑलवेल नहीं है. यही कारण है कि राकांपा के वरिष्ठ नेता छगन भुजबल जहां मंत्रिमंडल में शामिल नहीं किए जाने को लेकर नाराज हैं, वहीं बडनेरा से लगातार चार बार चुनकर आए रवि राणा भी मंत्रिमंडल में शामिल नहीं किए जाने से नाराज हैं. वे शीत सत्र छोड़कर अमरावती आ गए हैं, वहीं भुजबल ने महायुति को राम-राम करने का संकेत दिया है.

महाराष्ट्र मंत्रिमंडल में शामिल न किए जाने से एनसीपी के वरिष्ठ नेता छगन भुजबल बेहद नाराज हैं. छगन भुजबल ने बुधवार को अपने चुनाव क्षेत्र नासिक के येवला में समर्थकों की बैठक बुलाई. इस बैठक में उन्होंने अपनी आक्रामक भावनाओं का इजहार किया.उनके मुताबिक उन्हें किसी के हाथ का खिलौना बनाने का प्रयास किया जा रहा है.विधायक रवि राणा देवेंद्र फड़णवीस के करीबी रहने के बाद भी मंत्री नहीं बनाए जाने से नाराज हैं, यही कारण है कि वे सत्र बीच में छोड़कर अमरावती आ गए हैं. व्यथित मन से गौसेवा में लग गए हैं, ऐसी जानकारी कार्यालय द्वारा दी गई. उन्हें मंत्री नहीं बनाने से भाजपा नेत्री नवनीत राणा के साथ लाखों समर्थक भी नाराज हैं. उधरराकांपा नेता छगन भुजबल द्वारा बुलाई बैठक में उन्होंने समता परिषद के कार्यकर्ता और ओबीसी समाज के लोगों को भी बुलाया. छगन भुजबल ने बैठक में साफ किया **शेष पेज 2 पर**

ठाकरे बंधु होंगे साथ-साथ

उद्धव-राज के बीच हो सकता है मनोमिलन,राजनीति गर्माई

मुंबई- राजनीति और प्रेम में सब कुछ जायज कहा जाता है. यह बात महाराष्ट्र की राजनीति में पिछले कुछ वर्षों से पूरी तरह से साबित हो रही है. राज्य विधानसभा में झटके के बाद शिवसेना उबाठा के उद्धव ठाकरे और मनसे के राज ठाकरे के बीच एकता का सूत्रपात होने की चर्चाएं की जा रही है. यह होना राज्य की राजनीति के लिए काफी मायने रखने वाला साबित होगा.

महाराष्ट्र की राजनीति में ठाकरे परिवार का नाम हमेशा चर्चा में रहता है. अब उद्धव और राज ठाकरे को लेकर अटकलों का बाजार फिर गर्म है. दरअसल, रविवार को एमएनएस चीफ राज ठाकरे उद्धवा ठाकरे की पत्नी रश्मि ठाकरे के भतीजे शौनक पाटनकर की शादी के रिसेप्शन में पहुंचे. राज ठाकरे की पारिवारिक समारोह में मौजूदगी ने अटकलों को फिर से हवा दे दी है कि ठाकरे परिवार फिर एक हो सकता है. बांद्रा पश्चिम में ताज लैंड्स एंड में आयोजित रिसेप्शन में कई बड़ी हस्तियां भी शेष **पेज 2 पर**

विदर्भ स्वाभिमान

संपादकीय

एकता का अभाव जिले के बनता जा रहा तेजी से नासूर

संभागीय मुख्यालय रहने के बाद भी अमरावती जिला क्यों उपेक्षित हो रहा है, इसको लेकर कई सवाल पैदा हो रहे हैं. विगत पंद्रह वर्षों की राजनीति पर गौर करने के बाद जिस तरह से इसका विकास होना चाहिए था नहीं हो रहा है. प्रशासन पर किसी का नियंत्रण नहीं है. सभी राजनीतिक दलों में एक-दूसरे को लेकर मतभेद वाला रवैया सभी को त्रस्त कर रहा है. नेताओं के बीत मतभेद के साथ बढ़ता मनभेद, स्वयं को बड़ा दिखाने वाली मानसिकता के कारण अमरावती जिले का विकास रसातल में जा रहा है. इतना ही नहीं तो इनकी लड़ाई के कारण उसका लाभ दूसरा ले रहा है. जिले में भाजपानीत महायुति की शानदार सफलता के बाद भी एक भी मंत्री पद नहीं मिलना इसका जीता-जागता उदाहरण है. उसे बनाया तो मैं शांत नहीं रहूंगा वाली नीति ने ही जिले को पालकमंत्री के पद से वंचित किया है. आखिर नेताओं के आपसी इगो के कारण जिले को कब तक विकास से वंचित रहना पड़ेगा, इस पर गौर करने का समय आ गया है. हैरत की बात यह है कि नागपुर के बाद सबसे बड़े अमरावती जिले पर राज्य मंत्रिमंडल विस्तार में अन्याय किया गया है. राज्य में अमरावती पहले ऐसा जिला है जो कांग्रेस मुक्त हो गया है और यहां भाजपा के पांच विधायक चुने जाने के बावजूद किसी को भी मंत्री नहीं बनाया जाना सभी लोगों को अखर रहा है. इसका कारण भले ही राजनीतिक है लेकिन इसे संभागीय मुख्यालय अमरावती जिले पर अन्य माना जा रहा है. अमरावती मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के मामा का गांव है. अमरावती जिले से फडणवीस का सदैव अत्यधिक प्रेम रहा है. बावजूद इसके राज्य मंत्रिमंडल विस्तार में किस मजबूरी के कारण उन्होंने एक भी विधायक को मंत्री नहीं बनाया इसको लेकर तरह-तरह के कयास लगाए जा रहे हैं. महायुति को अमरावती संभाग में जोरदार सफलता मिली है. धामणगांव रेलवे से प्रताप अडसड, अमरावती से अजीत पवार गुट की सुलभा खोड़के तथा बडनेरा विधानसभा क्षेत्र से भाजपा समर्थित महायुति के प्रत्याशी तथा लगातार चार बार विधायक बनने वाले रवि राणा को मंत्री बनाए जाने की संभावना जताई जा रही थी लेकिन ऐसा लग रहा है कि राजनीतिक तिकड़ी के चलते और भाजपा द्वारा की गई लॉबिंग के कारण ही विधायक रवि राणा को चौथी बार विधायक चुने जाने के बाद भी मंत्री पद से वंचित रहना पड़ा.नेताओं के अहम के कारण जिले का सत्यानाश अब लोगों को सताने लगा है. समय आ गया है कि नेताओं के अहंकार की बलि चढ़ने से बचने के लिए लोगों को ही नेताओं को सुधारने का प्रयास करना पड़ेगा. वर्ना जिले के विकास को ग्रहण लग झकास होने में समय नहीं लगेगा.

असली सुकून तो गांव में ही है

विदर्भ स्वाभिमान
www.vidrabhswabhiman.com 9423426199

ज़ीवन में हम कितने भी आगे क्यों बढ़ जाएं लेकिन असली सुकून तो हमारे गांवों में ही है. यही कारण है कि महात्मा गांधी ने असली भारत तो गांवों में रहने की बात कहते थे. पिछले दिनों कई साल बाद गांव में जाने का मौका मिला था, बचपन में सबसे दयालू व्यक्ति के रूप में जिनका हमें परिचय हुआ, वह हमारे छोटे चाचा पंडित शिवप्रसाद दुबे, पंडित राधेश्याम चाचा के साथ ही सभी भाईयों के साथ ही सभी बहनों के साथ एक साथ मुलाकात किसी खुशी से कम नहीं थी. घर में चाची का देहांत होने के कारण जाना पड़ा था और सप्ताहभरका ही समय था लेकिन इस दौरान छोटे से दलापांडे धौरहरा के दुबान गांव में आई प्रगति की तब्दीली जहां बदलते गांव का परिचय करा रही थी, वहीं गांव में आज शहरों से भी बेहतरीन सुविधा उपलब्ध रहने का एहसास करा रही थी. पेड़-पौधों के बीच जहां नेचरोपैथी का निःशुल्क उपचार यहां मिलने से तमाम स्वास्थ्य संबंधी तकलीफें गायबलग रही थी, वहीं दूसरी ओर संयुक्त परिवार की खुशी का हर पल

अनुभव आ रहा था. भले ही 9 दिन ही गांव में रहे, लेकिन वहां के माहौल से महीनों की खुशी का अनुभव किया. छोटे भाई के साथ गए थे, भाई राजेश, सर्वे श, सुनील, अनिल के साथ ही गांव के सभी सदस्यों का प्रेम जिस तरह से मिला, निश्चित ही यह यादगार है. अगर आपके माता-पिता ने गांव में जीवन जिया है और खेत है तो निश्चित तौर पर अपने बच्चों के साथ अपने गांव जाएं. यह केवल स्वास्थ्य ही नहीं बल्कि हमारी जड़ों से हमें जोड़ने का काम करती हैं. मैं भाग्यशाली मानता हूं कि बचपन से ही संयुक्त परिवार में रहा हूं और अनुभव किया कि इससे बड़ी खुशी कहीं नहीं मिल सकती है. आप भी गांवों से नाता और खुशियों से नाता जरूर जोड़े रखें.

फड़णवीस मंत्रिमंडल में नहीं है ऑल इज वेल

पेज 1 से जारी-कि वह मंत्री पद के लिए लड़ेंगे. उनके इस फैसले से महाराष्ट्र की सियासत में हलचल मच सकती है.इस दौरान, मीटिंग में छगन भुजबल ने कहा कि हम वे लोग हैं जो शून्य से लड़कर निर्माण करते हैं. इसलिए, हम फिर से लड़ेंगे, यह लड़ाई मंत्री पद के लिए नहीं बल्कि पहचान के लिए है. आपने कई मंत्रालयों में काम किया है. हम 40 से अधिक वर्षों से काम कर रहे हैं. इसलिए यह कोई मुद्दा नहीं है. यह लड़ाई हमारी है. इसलिए सभी को मिलकर काम करना चाहिए. हम लोगों को विश्वास में लिए बिना कोई निर्णय नहीं लेंगे. येवला-लासलगांव विधानसभा क्षेत्र के सभी लोगों ने बहुत मेहनत की और मुझे पांचवीं बार मौका दिया. इसके लिए धन्यवाद. हमें क्षेत्र के विकास के लिए मिलकर काम करना होगा.

उन्होंने आगे कहा-हमने मंजरपाड़ा के माध्यम से येवले को अधिक पानी देने का वादा किया है. हमें इसे भविष्य में पूरा करना है. हम विधानसभा क्षेत्र के विकास के लिए कृतसंकल्पित हैं और विकास कार्य निरंतर जारी रहेगा. हम येवला-लासलगांव निर्वाचन क्षेत्र को एकजुट रखना चाहते हैं. उन्होंने आश्वासन दिया कि येवला निर्वाचन क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों को जल्द से जल्द पूरा किया जाएगा.इसके साथ ही छगन भुजबल ने इशारों में अजित पवार पर भी निशाना साधा है. उन्होंने कहा कि क्या मैं आपके हाथों का खिलौना हूं? क्या आपको लगता है कि जब भी आप मुझे कहेंगे, मैं खड़ा हो जाऊंगा और चुनाव लडूंगा, जब भी आप मुझे कहेंगे मैं बैठ जाऊंगा?गौरतलब है कि अजित पवार ने जब शरद पवार से बगावत कर एनसीपी तोड़ी थी, तब छगल भुजबल अजित पवार के सबसे बड़े समर्थक बनकर सामने आए थे. छगन भुजबल ने कहा कि वह मंत्री नहीं बनाए जाने से नाराज या निराश नहीं हैं, लेकिन उनके साथ जिस तरह का व्यवहार किया जा रहा है, इसको लेकर उनमें नाराजी को देखते हुए आगामी दिनों में क्या स्थिति होगी, बडनेरा के विधायक रवि राणा के समर्थकों को पूरी उम्मीद थी कि जिस तरह से देवेन्द्र फड़णवीस के हर मुसीबत में खड़े रहे, इससे उन्हें मंत्री पद का खिताब देकर नवाजा जाएगा.

ठाकरे बंधु होंगे साथ-साथ

पेज 1 से जारी- दिखीं.राज ठाकरे जैसे ही कार्यक्रम में पहुंचे उद्धव ठाकरे की पत्नी रश्मि ठाकरे ने उनका स्वागत किया. राज ठाकरे ने कार्यक्रम के दौरान रश्मि ठाकरे और उनकी मां से मुलाकात की. हालांकि, आदित्य ठाकरे राज से नहीं मिले क्योंकि वे लंच के लिए चले गए थे.यहां दिलचस्प बात ये है कि महाराष्ट्र के विधानसभा चुनाव में दोनों परिवार खुलकर एक दूसरे का विरोध करते दिखे थे. यहां तक की माहिम से राज ठाकरे के बेटे अमित के खिलाफ उद्धव ने अपना उम्मीदवार भी खड़ा किया था, जिसके बाद मनसे ने शिवसेना (उद्धव गुट) की आलोचना की थी.

ईशाना राउत से शौनक पाटनकर ने की शादी-शौनक पाटनकर ने नीता और सुबोध राउत की बेटी ईशाना राउत से शादी की. पाटनकर परिवार अब बांद्रा ईस्ट में रहने लगा है, जो पहले उद्धव के निवास स्थान मातोश्री के पास डोंबिवली में रहता था.अब दोनों परिवारों को एक साथ देख अटकलों का बाजार गर्म हो गया है. हिंदुस्तान टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, मनसे और शिवसेना (यूबीटी) दोनों के भीतर इस बात की चर्चा बढ़ रही है कि उद्धव और राज ठाकरे अपने मतभेदों को भुलाकर बीएमसी सहित आगामी निकाय चुनाव एक साथ लड़ सकते हैं. दोनों पार्टियों के कार्यकर्ता पहले भी सुलह की बात करते रहे हैं. कई लोगों का मानना है कि ठाकरे के साथ आने से मराठी वोटों को एकजुट करने में मदद मिल सकती है, जिसे निकाय चुनावों में महत्वपूर्ण माना जाता है.बता दें कि हाल ही में हुए राज्य विधानसभा चुनावों में शिवसेना (यूबीटी) और मनसे दोनों ने अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन किया है. शिवसेना (यूबीटी) जहां केवल 20 सीटें हासिल करने में सफल रही, वहीं मनसे एक भी सीट नहीं जीत पाई.राज्य विधानसभा चुनाव में दोनों ही दलों को बड़ा झटका लगा है.

विदर्भ स्वाभिमान
यह समाचार पत्र मालिक, प्रकाशक,संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे द्वारा एस.बी.प्रिंटर्स द्वारा दत्त पैलेस गांधी चौक अमरावती में मुद्रित कर विदर्भ स्वाभिमान कार्यालय,छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती में प्रकाशित किया गया है.मोबाइल नंबर 9423426199/8855019189.अखबार में प्रकाशित होने वाले विभिन्न पत्र,साहित्य,लेखकों,कवियों के विचारों व तथ्यों पर आधारित होते हैं. इनसे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है.संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे (संपादकीय दायित्व हेतु जिम्मेदार), मुख्य प्रबंधक- सौ.वीणा सुभाषचंद्र दुबे.Email-vidarbhäswabhiman@gmail.com.www.vidrabhswabhiman.com

व्यंकटेशधाम पूरा करता है श्री गोविंदा भक्तों के अरमान

भक्ती की शक्ती अपार होती है. कहते हैं जहां भाव है, वहीं देव है. कुछ इसी तरह का अनुभव साक्षात्कारी जयस्तंभ चौक से चंद कदमों की दूरी पर स्थित व्यंकटेश धाम में आने वाले भक्तों की मनोकामनाएं जहां पूरी होती हैं, वहीं दूसरी ओर यह मंदिर लाखों भक्तों के लिए अनुभवस्थल है. कई ऐसे भी भक्त हैं, जो बचपन से मंदिर से जुड़े हैं, उन्होंने श्री गोविंदा के आशिर्वाद का अनुभव किया है. मंदिर का प्रबंधन धर्म कार्य के साथ ही मानवता का कार्य करने में भी सदैव अग्रणी रहता है. निश्चल मन की गई भक्ति यहां तत्काल असर दिखाती है. बड़ी संख्या में भाविक ऐसे हैं, जो प्रभु की कृपा का अनुभव कर चुके हैं.

कहते हैं कि भक्ति की शक्ति अपार होती है. इसका दिल से अनुभव किया जा सकता है. कई लोग कहते हैं कि भगवान हैं या नहीं है, लेकिन हम यह क्यों भूल जाते हैं कि हमारे दिल की धड़कनों का संबंध भगवान से है. यही कारण है कि रस्सी खींचते ही हम निष्प्राण हो जाते हैं. जिस तरह से हवा को महसूस किया जाता है, आक्सीजन हमें जिंदा रखती है लेकिन वह दिखाई नहीं देता है. उसी तरह दुनिया में कोई ऐसी शक्ति है जो दुनिया का संचालन करती है. हमारे कर्मों का हिसाब-किताब करती है. अमरावती शहर ही नहीं तो विदर्भ में सुख्यात जयस्तंभ चौक के करीब स्थित व्यंकटेशधाम लाखों भक्तों का आस्थास्थल है. व्यंकटेशधाम मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष एड.आर.बी. अटल के नेतृत्व में सभी सेवा समर्पित पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं का अभिनंदन किया जाना चाहिए, जिनके द्वारा मंदिर की बेहतरीन व्यवस्था की जाती है. सालभर मंदिर में विभिन्न कार्यक्रम होते हैं. धार्मिकता को मानवता की सेवा का आकार देते हुए अन्नदान जैसे कार्यक्रम चलते रहते हैं. मंदिर के संस्थापक स्व.रतनलाल दायमा भगवान बालाजी के अनन्य भक्तों में से एक थे.पिता की ही तरह गोविंद दायमा, रमण दायमा के साथ ही पूरा दायमा परिवार ही भक्ति में ओतप्रोत रहता है. बाबूजी को तो साक्षात प्रभु का आशिर्वाद प्राप्त था. यह मंदिर लाखों भक्तों को आश्रय देता है. फिलहाल मंदिर की बेहतरीन जिम्मेदारी के निर्वहन में उनके दो रतन रमणभाई दायमा तथा गोविंदजी दायमा ने स्वयं को झोंक दिया है. कहते हैं कि श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से आत्मविश्वास बढ़ता है. बढ़े हुए आत्मविश्वास के भरोसे ही कठिन से कठिनतर कार्य आसानी से किया जा सकता है. मंदिर की साफ-सफाई से लेकर समय पर अभिषेक, पूजा-अर्चना के साथ ही सभी धार्मिक गतिविधियों को देखकर निश्चित ही गर्व होता है. मंदिर प्रबंधन की सराहना की जानी चाहिए. तमाम सम्पन्नता के बाद भी रमणजी तथा गोविंदजी की विनम्रता निश्चित ही सीख लेने लायक है. मेरा संबंध मंदिर से पिछले पंद्रह साल से है. वैसे तो प्रभु के प्रति अत्याधिक आत्मीयता मेरे पूज्य पिताजी स्व.जमुनाप्रसादजी पारसनाथजी दुबे के समय से ही है. क्योंकि पिताजी के साथ ही भगवान व्यंकटेश के चरणों में जाने का मौका मिला. इसके बाद तो मंदिर को लेकर ऐसे अनुभूति, इतना सुकून तथा संतोष मिला कि अब तो जितने अधिक बार जाऊं, उतना अच्छा है, ऐसा लगने लगा है. कलयुग के तमाम पापों का नष्ट कर जीवन को खुशहाल बनाने वाले भगवान व्यंकटेश बालाजी के साथ ही मां महालक्ष्मी तथा मां पद्मावती के दर्शन का लाभ यहां भक्तों को मिलता है.निर्धारित दिनों

गड़गड़ेश्वर महादेव पूरी करते हैं भक्तों की कामना

भगवान भोलेनाथ को देवों में महादेव कहा जाता है. वे जहां भोले हैं, वहीं दूसरी ओर अल्प भक्ति में प्रसन्न होने वाले देव हैं. अमरावती शहर में प्राचीन और जागृत मंदिरों में पौराणिक महत्व रखने वाला गड़गड़ेश्वर मंदिर भक्तों की कामनाओं को पूरा करता है. मंदिर में जहां अपार शांति और सुकून का अनुभव भक्त करते हैं, वहीं दूसरी ओर हजारों ऐसे भक्त हैं, जो इस मंदिर से कई वर्षों से जुड़े हुए हैं. भक्तों की मनोकामनाओं को जहां गड़गड़ेश्वर महादेव पूरी करते हैं, वहीं दूसरी ओर शहर ही नहीं तो गड़गड़ेश्वर मंदिर की ख्याति समूचे विदर्भ में जागृत देवस्थान के रूप में है.

यहां गड़गड़ेश्वर महादेव का श्रृंगार करने वाले युवाओं, महिलाओं की टीम सचमुच भाग्यशाली है. वे भोलेनाथ की सेवा में लगे रहते हैं. संस्थान के अध्यक्ष के साथ ही जहां सभी स्वयंसेवक भोलेनाथ की सेवा करते हैं, वहीं इस मंदिर में होने वाले महादेव की आरती मन को प्रसन्न करती है. भक्तों के मुताबिक सदैव दर्शन और आने वाले भक्तों को जीवन में कई चमत्कारी परिणाम दिखाई देते हैं. कई बताते हैं कि दुःखों के पल में जब कोई नहीं रहता है, तब भोलेनाथ रहते हैं. श्रद्धा और अंधश्रद्धा के अंतर को समझने वाले भक्त यहां जहां आते हैं, वहीं स्वयं मानते हैं कि कर्म अगर अच्छा है, सत्य के मार्ग पर चल रहे हैं तो शिव के दर्शन होना निश्चित है. लाखों भक्तों के आस्थास्थल अकोली रोड स्थिति गड़गड़ेश्वर महादेव मंदिर में रोज हजारों की संख्या में भाविक पहुंचते हैं. प्रभु का श्रृंगार करने के लिए जहां भक्तों की भीड़ लगी रहती है, वहीं मंदिर का पर्यावरण की दृष्टी से शानदार नजारा भक्तों को प्रसन्नचित करता है. मंदिर जागृत रहने के साथ ही नियमित पूजा-अर्चना तथा आरती में रोज सैकड़ों भाविक शामिल होते हैं.मंदिर से कई वर्षों से जुड़े प्रवीण बुंदेले सहित सैकड़ों युवाओं में भक्ती की

शक्ति का एहसास हुआ है. उनका कहना है कि गड़गड़ेश्वर महादेव की शरण में दिल से आने वाला और उनमें विश्वास करने वाला कभी निराश नहीं होता है. केवल आपका विश्वास दृढ़ होना चाहिए. भाव तिथे देव का अनुभव वही कर सकता है, जिसका पूरा विश्वास भगवान भोलेनाथ में हो. यहां पर प्रभु के भक्तों में अपार विश्वास के साथ ही यहां सालभर महाशिवरात्रि के अलावा विभिन्न कार्यक्रम होते हैं. कार्यक्रमों में सबसे बेहतरीन यहां होने वाली आरती होती है. आरती में शामिल होने वाले हर भक्त का मन तृप्त हो जाता है. शहर ही नहीं बल्कि जिले में यह प्राचीन और पौराणिक मंदिर है. इस स्थान पर मुनियों द्वारा तपस्या करने का जिक्र है. शांत, पर्यावरण से युक्त रहने के अलावा मंदिर का विशाल बरगद का पेड़ सभी भक्तों को शीतल छाया प्रदान करता है. सुबह से लेकर रात की आरती में सैकड़ों भाविक जहां शामिल होते हैं.

शुभेच्छुक- मनोज चौरे तथा मित्र मंडल, युवा स्वाभिमान पार्टी के सभी पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता,अमरावती

शहर शिवसेना उबाठा को बड़ा झटका, पदाधिकारी शिंदे शिवसेना में शामिल

दूसरा झटका लगा,उपमुख्यमंत्री शिंदे की उपस्थिति में शामिल

विदर्भ स्वाभिमान, 18 दिसंबर

अमरावती- अमरावती जिले में शिवसेना की बुरी हालत के लिए शिवसेना के समर्पितों को दरकिनार करने का आरोप लगाया जा रहा है. शहर के साथ ही जिले में शिवसेना उबाठा का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है. शिवसेना की इतनी दुर्गति शायद ही गठन के बाद से कभी हुई होगी. दर्यापुर के विधायक गजानन लवटे के साथ ही जिम्मेदारी पदाधिकारियों पर जहां निगाहें लगी हैं, वहीं दूसरी ओर पार्टी के पदाधिकारियों द्वारा पार्टी को राम-राम करने से निश्चित तौर पर शिवसेना के लिए शहर में बड़ा झटका माना जा रहा है.

विधानसभा चुनाव नतीजों के बाद जिले में उद्धव ठाकरे के सैकड़ों शिवसैनिकों का शिवसेना से मोह भंग हो गया है. एक नहीं दो नहीं बल्कि सैकड़ों शिवसेना पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं ने बुधवार को एक साथ मशाल से नाता तोड़कर एकनाथ शिंदे की शिवसेना का धनुष बाण थाम लिया. उद्धव सेना के जिला प्रमुख अमरावती तहसील प्रमुख, युवा सेना जिला प्रमुख, शहर प्रमुख, उप जिला प्रमुख, कुछ पूर्व पार्षद, पुराने दिग्गज पदाधिकारी समेत सैकड़ों शिवसैनिकों ने यूबीटी सेना को तगड़ा झटका दिया है. पार्टी के अभी तक निष्ठावा रहने वाले पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं द्वारा यह कदम उठाना निश्चित ही चौकाने वाला है. बुधवार की शाम को नागपुर के रवि भवन में उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की उपस्थिति में यूबीटी के शिवसैनिकों ने शिंदे सेना में प्रवेश किया. कार्यक्रम में केंद्रीय राज्यमंत्री प्रताप जाधव, पूर्व विधायक कैप्टन अभिजीत अडसूल, जिला प्रमुख अस्ग्ण पडोले, महानगर प्रमुख संतोष बद्रे, राम पाटिल समेत कई दिग्गज नेता उपस्थित थे. जिले में उद्धव सेना के जिला प्रमुख शाम देशमुख, तहसील प्रमुख आशीष धर्माले, युवा सेना प्रमुख राहुल माटोड़े, पूर्व पार्षद वर्षा भोयर, ललीत झंझाड़, स्वराज ठाकरे, प्रशांत जाधव, पूर्व पार्षद राजेंद्र दारोकार, मधुकर शिंदे, रणजीत धोटे, उमेश घुरड़े, अमोल वैरागड़े, कार्तिक गजभिये, दिलीप ठाकरे, पंजाबराव तायवाड़े समेत दर्जनों पदाधिकारी-कार्यकर्ताओ ने शिंदे सेना में अधिकृत प्रवेश किया. यह ऐसे पदाधिकारी और कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने सदैव पार्टी को देने का ही काम किया.इससे बड़ा झटका उद्धव ठाकरे की शिवसेना को लगा.

बैंक ही नहीं बल्कि सहकारिता की शान है अर्थसरिता

किसी भी संस्था के लिए 25 साल का समय काफी महत्वपूर्ण होता है. सहकारिता क्षेत्र की अभिनंदन बैंक ने जहां अपने निवेशकों का विश्वास हासिल किया है, वहीं इस बैंक ने समय के साथ स्वयं में बदलाव किया है. बैंक की मुख्यालय इमारत तैयार होने के करीब है. 26वें वर्ष में पदार्पण के साथ ही बैंक की स्थापना से लेकर लगातार संचालकों के विश्वास के साथ ही यह बैंक उत्तरोत्तर प्रगति कर रही है. बैंक द्वारा गत वर्ष प्रकाशित अर्थसरिता जहां सहकार नियमों तथा काम करने के तरीके का अनूठा उदाहरण बन सकती है, वहीं दूसरी ओर बैंक के सभी कामकाज की पारदर्शिता सराहनीय है. बैंक के अध्यक्ष एड. विजय बोथरा, प्रबंधन बोर्ड के अध्यक्ष सुदर्शन गांग के साथ ही सभी संचालकों का समर्पण, कर्मयोगी कर्मचारियों की मेहनत ने इस बैंक को उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रणी किया है. विदर्भ स्वाभिमान की ओर से उत्तरोत्तर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाएं.

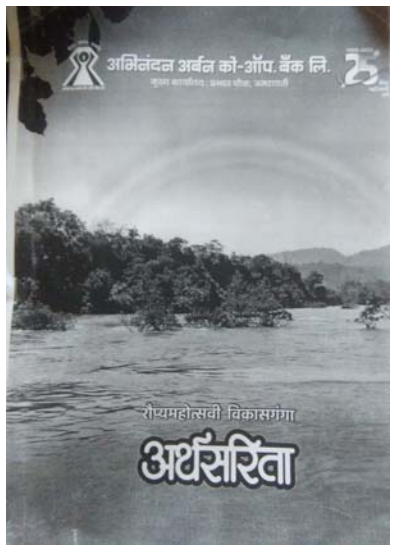

किसी भी संस्था के लिए 25 साल का समय काफी महत्वपूर्ण होता है. संस्था से भी अधिक बैंक के लिए होता है. लेकिन अमरावती ही नहीं तो समूचे राज्य में सहकारिता क्षेत्र को गौरवान्वित करने वाली बैंक के रूप में अभिनंदन अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक ने जिस तरह के उच्च मापदंडों का पालन किया है और बैंकिंग के क्षेत्र में लोकप्रियता के साथ ही सहकार निष्ठ सहित कई दर्जन पुरस्कार प्राप्त किए हैं, उसके चलते यह कहना गलत नहीं होगा कि अपने कार्यों से जहां बैंक ने ग्राहकों, निवेशकों के दिलों में स्थान बनाया है, बल्कि पिछले पच्चीस साल से यह बैंक लगातार कामयाबी की बुलंदी हासिल कर रही है.

वित्तीय संस्थाओं को तलवार की धार पर चलनी पड़ती है. आर्थिक मामला हर व्यक्ति के लिए विश्वास से जुड़ा रहा है. बैंक के रौप्य महोत्सव वर्ष पर सुख्यात समाजसेवी और बैंक के मैनेजमेंट बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में सेवाएं देने वाले सुदर्शन गांग के संपादकत्व में प्रकाशित अर्थसरिता के हर पन्ने जहां पठनीय हैं, वहीं दूसरी ओर बैंक के पारदर्शी हिसाब-किताब और अभी तक की उपलब्धियों की सटीक जानकारी दी गई है. यह निश्चित ही अभिनंदन अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक की पारदर्शी प्रणाली का सबूत है, वहीं दूसरी ओर इसका हर पन्ना जानकारी युक्त है. बेहतरीन पठनीय सामग्री के लिए निश्चित ही संपादक के साथ ही हर संपादकीय सहयोगी अभिनंदन का पात्र है. बैंक ने वैसे तो कई इतिहास अपने नाम किए हैं लेकिन बैंक की आर्थिक प्रगति के साथ ही बैंक के कर्मचारियों को कर्मयोगी मानने का बड़प्पन संचालकों में रहने के कारण ही बैंक शानदार प्रगती कर रही है, इसमें कोई भी इंकार नहीं कर सकता है.

दृष्टि,मिशन व उद्देश्य

किसी भी संस्था, बैंक की जान उसकी दृष्टि, मिशन और उद्देश्य रहता है. अर्थसरिता में अभिनंदन अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक ने इसके महत्व को समझते हुए पूरा एक पेज इसको दिया है. इसमें जहां उन्होंने सहकारिता के विकास की बात कही है, वहीं सहकारिता के उच्च मापदंडों का पालन करते हुए बैंक को मजबूती प्रदान कर राष्ट्र निर्माण में भी इसका योगदान देने की बात कही है. इससे सामाजिक, सहकार विकास के साथ ही बैंक ने राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का भी गौरवपूर्ण उल्लेख किया है. बैंक का मिशन जहां इससे भी बेहतरीन है, वहीं आगामी समय में मल्टीस्टेट शेड्यूल्ड बैंक का दर्जा दिलाने, डिपॉजिटरों के साथ ही कर्जदारों के लिए आधारस्तंभ बनकर सहकार से समृद्धि की ओर अग्रणी होने, ग्राहकों को अत्याधुनिक और स्तरीय सुविधा प्रदान करते हुए बैंक के क्षेत्र का विस्तार करने, राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर बैंक को नाम दिलाने के मिशन का जिक्र है. इतना ही नहीं तो केवल व्यवसाय ही नहीं बल्कि द्वारा सामाजिक दायित्व की भावना से किए जाने वाले कामों का उद्देश्य भी तय किया गया है.

हायटेक, हायटच सेवा प्रदान

सुविधा में भी दुविधा रहती है. आज सायबर क्राइम इस कदर बढ़े हैं कि पूरा विश्व परेशान है, इस पर भी अभिनंदन अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक ने ध्यान दिया है. इसे रोकने के साथ ही ई-बैंकिंग की नई युक्तियों के साथ ही ग्राहकों को हायटेक व हायटच की कार्यक्षम सेवा प्रदान करने का मानस है. सामाजिक दायित्व के साथ ही बैंक ने रोजगार को अत्याधिक महत्व दिया है. कृषि और कृषि संबंधित उपक्रमों के साथ ही व्यापारी, दुकानदार, चिल्लर विक्रेताओं को उनकी जरूरतों के मुताबिक मजबूत बनाने में योगदान देने के साथ ही रोजगार के अवसर सृजन करने पर जोर दिया है. साथ ही पर्यावरण पर भी ध्यान दिया है. सहकारिता के साथ महत्वपूर्ण तत्व भी अर्थसरिता में समाहित हैं. इनका अगर पालन किया जाए तो निश्चित ही सहकारिता से समृद्धि को हासिल किया जा सकता है. इसमें किसी तरह का संदेह नहीं होना चाहिए.

अमरावती की शान है किताब

बैंकिंग हिसाब-किताब, सहकारिता मापदंड, पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभाताई पाटिल से लेकर सहकार आयुक्त के बैंक के बारे में संदेश ही बैंक की गरिमा का बखान करने के लिए काफी हैं. जिले की शान को लेकर भी संपादक सतर्क हैं. इसमें उन्होंने अमरावती के पौराणिक महत्व के मंदिरों के इतिहास के साथ ही पर्यटन स्थलों की जानकारी दी है. यह बैंक की शान के साथ ही अमरावती के लिए पहचान बनी है.जिले की शैक्षिक उपलब्धियों को भी गौरव ान्वित करने का काम अर्थसरिता ने किया है. बैंकिंग के साथ ही सामाजिक, पर्यावरण, धार्मिक सहित सभी बातों को इसमें बेहतरीन तरीके से कवर किया गया है.

अमरावती के गौरव के साथ वंदे मातरम से आरंभ किताब का हर पन्ना बेहतरीन संदेश देता है. सेवा संचय प्रगति के घोषवाक्य से शुरू किताब ने अमरावती जिले की पहचान को दिखाने का काम किया है. यह किताब निश्चित ही अन्यों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनेगी, इससे कोई भी इंकार नहीं कर सकता है. बैंक की उत्तरोत्तर प्रगति और राष्ट्रनिर्माण में बेहतरीन योगदान के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ. साथ ही बैंक की प्रगति में मील का पत्थर बनने वाले अध्यक्ष, प्रबंधन बोर्ड के अध्यक्ष, समस्त सेवायोगी कर्मचारियों का भी अभिनंदन है. निश्चित ही बैंक न केवल राज्य बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर अमरावती की गरिमा बढ़ाएगी, इसका पूरा विश्वास है. पुस्तक के संपादक सहित सभी का प्रयास भी अभिनंदनीय है.

ग्राहकों के विश्वास पर सदैव खरा उतरा है प्रथमेश बुक्स

संचालक राजेश गुल्हाने का मिलनसार स्वभाव करता है ग्राहकों को प्रभावित,तत्पर सेवा को देते हैं सदैव महत्व

विदर्भ स्वाभिमान, 18 दिसं.

अमरावती- किसी भी क्षेत्र में विश्वास बनाना आसान बात नही है. विशेष रूप से स्पर्धा के इस युग में किसी भी व्यवसाय में स्वयं का स्थान बनाना आसान नहीं है. लेकिन राजेश गुल्हाने द्वारा संचालित रविनगर चौक में स्थित प्रथमेश बुक्स ने अपना स्वयं का स्थान बनाया है. ग्राहकों की यहां पर सदैव भीड़ लगी रहती है, यह इस बात का सबूत है कि यहां पर तत्पर सेवा के

साथ ही ग्राहकों की जरूरत के मुताबिक सभी वस्तुएं रहती हैं. सुबह दुकान खुलने से लेकर बंद होने तक ग्राहकों की भीड़ लोकप्रियता का जहां सबूत है, वहीं ग्राहकों के प्यार को राजेश गुल्हाने अपनी सबसे बड़ी पूंजी मानते हैं. उनका कहना है कि ग्राहकों का प्यार ही उन्हें यहां तक लेकर आया है. प्रथमेश बुक्स के संचालक राजेश गुल्हाने जितने बेहतरीन व्यवसायी हैं, उससे भी अच्छे इंसान है. हजारों मित्र उन्होंने बनाए हैं.

रविनगर चौक में दुकान में भीड़ लगी रहती है. हर तरह की किताबें. नोटबुक्स, पेन के साथ ही रजिस्टर तथा शिक्षा साहित्य से जुड़े सभी साहित्य यहां मिलते हैं. संचालक के साथ ही दुकान में सेवा देने वाले बेटे की विनम्रता ग्राहकों को प्रभावित करता है. व्यवसाय के नाम पर इस व्यवसाय के क्षेत्र में अल्प समय में ही अपना स्वयं का स्थान बनाने में तथा ग्राहकों का विश्वास जीतने में शानदार कामयाब प्राप्त की है.गुणवत्ता के साथ ही समय के मुताबिक बदलाव जैसी खूबियों ने प्रथमेश को अपार लोकप्रियता प्रदान की है.संचालक राजेश गुल्हाने के मधुर स्वभाव, गुणवत्ता में कभी भी समझौता नहीं करने, ग्राहकों की तत्पर सेवा जैसी खूबियों ने अमरावती शहर ही नहीं तो इसे विदर्भ स्तर पर लोकप्रिय बना दिया है. गुणवत्ता के साथ विश्वसनीयता समय के साथ चलते हुए ग्राहक सेवा में समर्पित रहे.

मेहनत ही कामयाबी की सीढ़ी

अमरावती- जीवन में सफलता के लिए मेहनत को कोई पर्याय नहीं हो सकता है. इसलिए जीवन में अगर कामयाब होना है तो निश्चित तौर पर अथक मेहनत, काम के प्रति समर्पित रवैया जरूरी है. यह बात युवा व्यवसायी संजय विजयकर ने कही. स्वयं दो दुकानों का संचालन करने के साथ ही किसी भी काम को कम नहीं आकते हैं. उनका कहना है कि जब दिल से काम किया जाता है तो उसमें सफलता निश्चित होती है. विदर्भ स्वाभिमान के पंद्रहवें वर्ष में पर्दापण पर हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए संजय विजयकर ने इसके इसी तरह उत्तरोत्तर प्रगति की कामना की.

बंडू बेल्ट के संचालक संजय विजयकर भी शहर के ऐसे ही व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपनी मेहनत, लगन और समर्पण के साथ विनम्र स्वभाव के कारण इस क्षेत्र में जोरदार नाम कमाया है. सादगी पसंद और यटारों का दिलदार यार संजय के स्वभाव को देखकर लगता नहीं कि उसने युवाओं के सामने आदर्श स्थापित किया है. दो-दो दुकानों का संचालन करने के बाद भी संजय के मन में कभी गर्व नहीं रहता है. बातचीत में वे बताते हैं कि माता-पिता का आशिर्वाद और मेहनत के बलबूते यहां तक पहुंचा है. बेहतरीन

सहयोगियों के कारण आज इस क्षेत्र में नाम चलता है. जयस्तंभ चौक के करीब स्थिति बंडू बेल्ट नामक प्रतिष्ठान ने ग्राहकों के दिलों में स्थान बनाया है. कई लोगों को संघर्ष से एलर्जी होती है. लेकिन हम भूल जाते हैं कि संघर्ष की राशि ही सफलता की भी राशि होती है. असफलता इस बात का सबूत होती है कि प्रयास में कमी है. इसलिए हमें तब तक संघर्ष प्रसन्न होकर करना चाहिए, जब तक कि सफलता नहीं मिलती है. जीत का जज्बा ही जीत दिलाता है. लेकिन आजकल कोई शुरूवात से पहले ही उसकी असफलता के बारे में सोचने लगता है. बचपन से ही काम को समर्पित संजय ने व्यवसाय में सफलता के साथ ही हजारों मित्रों का परिवार भी बनाया है.

विशेषज्ञ डाक्टर की सलाह पर ही लें पैरासिटामोल,वर्ना पड़ सकता है भारी

विदर्भ स्वाभिमान,18 दिसंबर

अमरावती-पैरासिटामोल एक सामान्य दर्द निवारक दवा है, जिसे लोग बुखार, सिरदर्द, बदन दर्द, और अन्य हल्के दर्दों के इलाज के लिए लेते हैं. हालांकि, इसका अत्यधिक और अनियंत्रित सेवन आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है. हाल ही में हुए एक अध्ययन में यह सामने आया है कि पैरासिटामोल का ज्यादा सेवन सेहत पर गंभीर प्रभाव डाल सकता है. आइए जानते हैं कि पैरासिटामोल का अत्यधिक सेवन किस तरह की बीमारियों का कारण बन सकता है और इससे बचने के उपाय क्या हैं.

पैरासिटामोल का अत्यधिक सेवन लिवर पर गंभीर प्रभाव डाल सकता है. अगर आप रोजाना 4 ग्राम से अधिक पैरासिटामोल का सेवन करते हैं, तो यह आपके लिवर के स्वास्थ्य को नकसान पहुंचा सकता है. इसके सेवन से पीलिया, लिवर फेलियर और लिवर की गंभीर समस्याएं हो सकती हैं. समय के साथ, लिवर की कार्यक्षमता पर इस दवा का असर बढ़ सकता है, जो लिवर ट्रांसप्लांट की आवश्यकता तक जा सकता है. इससे आपके शरीर में टॉक्सिन्स का सही तरीके से निष्कासन नहीं हो पाता और आपका स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है.

किडनी पर प्रभाव-पैरासिटामोल का लंबे समय तक सेवन किडनी की कार्यक्षमता को धीरे-धीरे प्रभावित कर सकता है. इससे किडनी फेलियर का खतरा बढ़ जाता है, क्योंकि पैरासिटामोल के तत्व किडनी में जमा हो सकते हैं और उसके ठीक से काम करने में रुकावट डाल सकते हैं.अत्यधिक सेवन से किडनी के फेल होने का जोखिम गंभीर हो सकता है, और यह इलाज के लिए डायलिसिस की आवश्यकता भी पैदा कर सकता है.

हार्ट अटैक और स्ट्रोक का खतरा

पैरासिटामोल का अत्यधिक और दीर्घकालिक सेवन रक्त परिसंचरण पर असर डाल सकता है. इससे हार्ट अटैक और स्ट्रोक का खतरा बढ़ सकता है. दवा के सेवन से रक्त का थक्का बनने की प्रक्रिया बढ़ सकती है, जिससे रक्त प्रवाह में रुकावट आ सकती है. इससे दिल और मस्तिष्क पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है, जो जीवन के लिए जोखिमपूर्ण हो सकता है. इसके अलावा, लगातार सेवन से रक्तदाब में वृद्धि भी हो सकती है, जिससे दिल की बीमारी की संभावना और बढ़ जाती है.पैरासिटामोल का अत्यधिक सेवन मानसिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक असर डाल सकता है. यह दवा डिप्रेशन, एंग्जायटी, और अन्य मानसिक समस्याओं को जन्म दे सकती है. कई बार ओवरडोज़ से व्यक्ति की सोचने-समझने की क्षमता में कमी आ सकती है और वो मानसिक तनाव का शिकार हो सकता है. इसकी वजह से मस्तिष्क की कार्यक्षमता प्रभावित हो सकती है. ऐसे में डाक्टर की सलाह पर ही इसका सेवन करना चाहिए.लीवर, किडनी के मरीजों की संख्या के साथ दिल का दौरा पड़ने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है.

परमपिता भगवान आपके अनंत उपकार हैं,कैसे कर्ज चुकाऊं.....

कहते हैं श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से ही जीवन चलता है. धार्मिक अथवा संस्कार को महत्व देने वाले लोगों का जीवन नास्तिकों के जीवन से बेहतरीन रहता है. वह कभी किसी को दुःखी करने का काम नहीं करते हैं. प्रभु मानें, प्रकृति मानें , हम सांसें भी जो लेते हैं, वह भी किसी अदृष्य शक्ति का परिचायक होती है. प्रभु के अनंत उपकारों के बारे में किसी ने बेहतरीन भेजा था, इसे विदर्भ स्वाभिमान द्वारा यहां प्रस्तुत किया जा रहा है. निश्चित तौर पर हम अपने अच्छे कर्मों से प्रभु को प्रसन्न कर सकते.

कोई आवेदन नहीं किया था,किसी की सिफारिश नहीं थी,फिर भी यह स्वस्थ शरीर प्राप्त हुआ.सिर से लेकर पैर के अंगूठे तक हर क्षण रक्त प्रवाह हो रहा है....जीभ पर नियमित लार का अभिषेक कर रहा है...न जाने कौनसा यंत्र लगाया है कि निरंतर ह्रदय धड़कता है...

पूरे शरीर हर अंग मे बिना रुकावट संदेशवाहन करने वाली प्रणाली कैसे चल रही है कुछ समझ नहीं आता.हड्डियों और मांस में बहने वाला रक्त कौन सा अद्वितीय आर्किटेक्चर है,इसका किसी को अंदाजा भी नहीं है.हजार-हजार मेगापिक्सल वाले दो-दो कैमरे.के रूप मे आँखे संसार के दृश्य कैद कर रही है.

दस-दस हजार टेस्ट करने वाली जीभ नाम की टेस्टर कितने प्रकार के स्वाद का परीक्षण कर रही है.सैकड़ों संवेदनाओं का अनुभव कराने वाली त्वचा नाम की सेंसर प्रणाली का विज्ञान जाना ही नहीं जा सकता.

अलग-अलग फ्रीक्वेंसी की आवाज पैदा करने वाली स्वर प्रणाली शरीर मे कंठ के रूप मे है.उन फ्रीक्वेंसी का कोडिंग-डीकोडिंग करने वाले कान नाम का यंत्र इस शरीर की विशेषता है.पचहत्तर प्रतिशत पानी से भरा शरीर लाखों रोमकूप होने के बावजूद कहीं भी लीक नहीं होता. बिना किसी सहारे मैं सीधा खड़ा रह सकता हूँ.गाड़ी के टायर चलने पर घिसते हैं, पर पैर के .तलवे जीवन भर चलने के बाद आज तक नहीं घिसे अद्भुत ऐसी रचना है. प्रभु आपकी विचित्र लीला का दर्शन उसे ही हो सकता है जो आपके प्रति कृतज्ञता का भाव रखता है. वर्ना आज के दौर में जन्म देने वाले माता-पिता के कर्ज को मानने से भी इंकार करने वाले बहुतायत हैं. आपकी कृपा केवल आप ही जान सकते हो.

हे भगवान तू इसका संचालक है तू हीं निर्माता.स्मृति, शक्ति, शांति ये सब भगवान तू देता है. तू ही अंदर बैठ कर शरीर चला रहा है.अद्भुत है यह सब, अविश्वसनीय.

ऐसे शरीर रूपी मशीन में हमेशा तू ही है,इसका अनुभव कराने वाला आत्मा भगवान तू है. यह तेरा खेल मात्र है. मै तेरे खेल का निश्छल, निस्वार्थ आनंद का हिस्सा रहूँ!...ऐसी सद्बुद्धि मुझे देना प्रभु....

देश विकास में युवा होते हैं मील का पत्थर

विदर्भ स्वाभिमान,18 दिसंबर

वाराणसी- उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को कहा कि युवा शक्ति की उपेक्षा कर कोई देश कभी आगे नहीं बढ़ सकता. मुख्यमंत्री ने यहां उदय प्रताप कॉलेज (यूपी कॉलेज) के 115 वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कहा-युवा शक्ति की उपेक्षा कर कोई देश कभी आगे नहीं बढ़ सकता. हमें उनकी भावनाओं को सम्मान करना होगा और उन्हें उचित अवसर देना होगा. उन्होंने कहा, जिस देश की युवा शक्ति कंठित, अपराध बोध से ग्रसित और दिग्भ्रमित हो, वह देश कभी आगे नहीं बढ़ सकता. जब भी परिवर्तन हुआ या होगा, युवा शक्ति ही करेगी.युवा शक्ति को केंद्र बिंदु के रूप में रखकर संस्थानों को खुद को तैयार करना होगा." इस कॉलेज की प्रशंसा करते हुए योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उसने एक सदी में शिक्षा और जीवन के सर्वांगीण विकास के क्षेत्र में जो कार्य किए हैं, उसके प्रति केवल वाराणसी, पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार ही नहीं, बल्कि समूचा प्रदेश एवं देश विनम्र भाव से कृतज्ञता ज्ञापित करता है.योगी ने कहा कि कि राजर्षि उदय प्रताप सिंह जूदेव ने 1909 में बाबा विश्वनाथ की पावन स्थली पर जो

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा युवाओं की उपेक्षा किसी भी राष्ट्र पर पड़ेगी सदैव भारी

नींव रखी थी वह उनके विराट व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है. उन्होंने कहा कि उनके मन में यह भाव रहा होगा कि राष्ट्रीयता से ओतप्रोत भावी भारत के निर्माण के लिए ऐसा शिक्षण-प्रशिक्षण संस्था देना है, जो आजादी के आंदोलन को गति और आवश्यकता पड़ने पर प्रत्येक क्षेत्र में देश को योग्य नागरिक भी दे सके. योगी ने कहा कि यहां से शिक्षित-प्रशिक्षित स्नातक, परास्नातक, खिलाड़ी, कृषि, डेयरी समेत प्रत्येक क्षेत्र में मिलते हैं. इस मौके पर यूपी कॉलेज के बच्चों ने कुलगीत एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया. योगी ने कहा कि राजर्षि की 175 वीं वर्षगांठ के कारण यह वर्ष उदय प्रताप कॉलेज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है. उन्होंने कहा कि राजर्षि उदय प्रताप सिंह भिनगा स्टेट (श्रावस्ती) के राजा थे, लेकिन विद्या का केंद्र होने के कारण उन्होंने काशी को ही सबसे उपयुक्त माना तथा फिर 1909 में यूपी कॉलेज और 1916 में मदन मोहन मालवीय द्वारा काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई. वाराणसी के एक दिवसीय दौरे में मुख्यमंत्री ने श्री काशी विश्वनाथ एवं काल भैरव मंदिर में दर्शन पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त किया. मुख्यमंत्री ने षोडशोपचार विधि से बाबा विश्वनाथ का रुद्राभिषेक किया. इसके बाद गंगा द्वार से क्रूज में सवार होकर डोमरी के लिए रवाना हुए. कथा स्थल पर पहुंचते ही मंच पर सतुआ बाबा ने योगी का स्वागत किया. पूरे पंडाल में जयघोष होने लगा. डुमरी में गंगा किनारे प्रसिद्ध कथावाचक सिहोर वाले पंडित प्रदीप मिश्रा द्वारा किए जा रहे शिव पराण कथा स्थल पर पहुंच कर योगी ने श्रद्धालुओं के साथ कथा सुनी. इस मौके पर मार्गदर्शन किया.

विज्ञापन प्रतिनिधि चाहिए

विदर्भ स्वाभिमान 75 आजादी का अमृत महोत्सव आचार-विचार वाला अखबार

महाराष्ट्र के साथ ही उत्तर प्रदेश में तेजी से लोकप्रिय हो रहे राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान के लिए विज्ञापन प्रतिनिधि की आवश्यकता है. मेहनती ही संपर्क करें.

- संपर्क -
विदर्भ स्वाभिमान कार्यालय
छाया कॉलोनी,अकोली रोड, अमरावती.
मो. 9423426199, 8855019189

सेवाभावी, समर्पित व्यक्तित्व के धनी हैं मनीषभाई

जन्मदिन पर विशेष : लायंस के माध्यम से जनसेवा,माता-पिता के भक्त हैं,विनम्रता है खूबी

माता-पिता के भक्त के साथ ही लायंस के माध्यम से सामाजिक कामों में सदैव अग्रणी तथा रक्तदान सेवा में समर्पित व्यक्तित्व के रूप में मनीष दारा का उल्लेख किया जा सकता है. वे कहते हैं कि जिस बेटे पर माता-पिता का आशिर्वाद हो, वह कभी पीछे नहीं हट सकता है. उनका 18 को जन्मदिन था, हजारों मित्रों ने जन्मदिन पर शुभकामनाएं दी. उन्होंने भी मित्रों के प्रति कृतज्ञता जताते हुए विश्वास जताया कि लोगों का प्रेम सदैव बना रहेगा.

यारों का दिलदाल यार तथा श्री बालाजी ब्लड बैंड और कम्पोनेंट लैब के मनीष दारा ऐसे ही व्यक्ति हैं. जिसे चाहते हैं दिल से चाहते हैं. उनके इसी स्वभाव के कारण हजारों का मित्र परविार उन्हों ने तैयार किया है. उनकी तमाम व्यस्तता के बाद भी समाजसेवी लायन्स क्लब के साथ ही अनगिनत संगठनों से जुड़े हुए हैं. उनका कहना है कि जब हम अच्छा करते हैं तो हमारे साथ ऊपरवाला कभी बुरा नहीं होने देता है. इसलिए अपनी ओर से जितना संभव हो, अच्छा करने का प्रयास करना चाहिए.कोरोना महामारी के दौरान मनीष दारा ने जनसेवा में जान की बाजी लगाकर जिस तरह से स्वयं को झों का था, ब्लड के साथ ही प्लेटलेटस मुहैया कराते हुए सैकड़ों लोगों को जीवनदान दिया था, उसकी सराहना सभी ने की थी. उनके सोचने, काम का अंदाज भी निराला है. कुछ इसी तरह के व्यक्तित्व अमरावती के सुख्यात समाजसेवी, बहुमुखी व्यक्तित्व मनीष दारा हैं. सम्पन्नता में भी उनकी विनम्रता किसी को भी बगैर प्रभावित किए नहीं रहती है. माता-पिता के वे जहां अनन्य भक्त हैं, वहीं यारों के लिए दिलदार यार हैं. गरीबों, जरूरतमंदों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहने वाले युवा समाजसेवी हैं. वे कहते हैं कि प्रभु ने जीवन के रूप में जो उपहार दिया है, उसका समाज के लिए सदैव उपयोग करने का प्रयास वे करते हैं. लायन्स के भीष्म पितामह डॉ. लक्ष्मीकांत राठी के विचारों पर चलने का सदैव प्रयास करने के साथही वे कहते हैं कि हर व्यक्ती को भी अपने स्तर पर यथासंभव समाज की सेवा में योगदान देना चाहिए. सदैव व्यस्त रहने वाले मनीष दारा समय के भी काफी पाबंद व्यक्ती हैं. उनके मुताबिक गया समय वापस नहीं लौटता है, ऐसे में उसके महत्व को समझना चाहिए. उनका मानना है कि

जो समय की कद्र नहीं करता है, उसकी कद्र समय भी नहीं करता है.

स्पष्ट वक्ता के साथ ही सम्पन्नता में भी उनकी सादगी, आत्मीयता वाला स्वभाव उनके करीबियों को प्रेरित करता है. रक्तदान के क्षेत्र में आज न केवल अमरावती बल्की समूचे विदर्भ में अपार सम्मानजनक स्थान रखने वाली श्री बालाजी ब्लड बैं क को समय के साथ जहां अपडेट करने का प्रयास किया, वहीं पिता के आदर्श विचारों पर अमल करते हुए समाज सेवा का कार्य भी निरंतर जारी रखा है. कोरोना महामारी के दौरान उनके कामों की सराहना सभी ने की.

रक्तदान जैसे मानवीय और सामाजिक कामों में उनकी सहभागिता समूचा जिला जानता है. यारों के लिए दिलदार मनीषभाई में किसी भी बात को लेकर घमंड नहीं रहता है. उनकी सादगी, उनकी विनम्रता के कारण लाखों मित्र परिवार बनाए हैं. पिछले पंद्रहवर्षों से मनीष के साथ रहने और मित्र के रूप में जानने का मौका मिला. इस दौरान उसके व्यक्तीत्व को समझने का मौका मिला. किसी की भी मदद के लिए जहां वे तत्पर रहते हैं, वहीं वैद्यकीय क्षेत्र की गरिमा को न केवल बरकरार रखा है, बल्कि लगातार इसे बढ़ाने का काम किया है.

शहर ही नहीं तो राष्ट्रीय तथा लायन्स क्लब के माध्यम से सेवाभावी उपक्रमों में भी योगदान देते हैं. वह मानसेवी, मानवता की सेवा को प्राथमिकता देने वाले व्यक्ति हैं.गरीबों के साथ खुशियां बांटते रहते है. मनीष दारा का मानना है कि समाज, शहर हमें ब हुत कुछ देता है. ऐसे में जब हम आत्मनिर्भर बन जाएं तो सामाजिक ऋण लौटाने का काम करने की सीख उन्हें बचपन से ही मिली है. इसका पालन करने का प्रयास करते हैं. मनीषभाई के चेहरे पर सदैव मुस्कराहट, लोगों के प्रति अपार प्यार जैसी खूबियों के कारण हजारों मित्र परिवार बनाए हैं. यारों के सर जहां दिलदार यार हैं, वहीं संबंधों को अत्याधिक महत्व देते हैं. उनके साथ जब से संपर्क में आया हूं तब से उनका प्रेम, आत्मीयता दिखाई देती है. अपने कर्मचारियों के प्रति उनकी सोच आज के दौर में अन्यों के लिए नजीर बन सकती है.वे विनम्रता से स्वीकार करते हैं कि आज कर्मचारियों का समर्पण उनकी प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए जितना संभव होता है, उनके लिए अच्छा करने का प्रयास करते हैं. स्थानीय राजकमल चौक से चंद कदमों की दूरी पर स्थित श्रीबालाजी ब्लड बैंक एन्ड कम्पोनंट लैब में समुचित मार्गदर्शन के साथ ही रक्त आपूर्ति का काम करते हैं. चौबीसों घंटे सेवा देने के साथ ही उनके पास ह जारों रक्तदाताओं की सूची है, जो उनके एक शब्द पर जरूरतमंद मरीजों की मदद के लिए तत्पर रहते हैं. स्वयं भी गरीबों, जरूरतमंदों के लिए यथासंभव सहयोग देते हैं. यारों के दिलदार यार मनीष दारा का 18 दिसंबर को जन्मदिन है, विदर्भ स्वाभिमान परिवार की करोड़ों अग्रीम शुभकामनाएं.

विदर्भ स्वाभिमान डेस्क

शहर के युवा समाजसेवी, श्री बालाजी ब्लड बैं क एन्ड कम्पोनंट के संचालक, यारों के दिलदार यार, सुख्यात समाजसेवी मनीष दारा को जन्मदिन 18 दिसंबर पर करोड़ों शुभकामनाएं. भगवान उन्हें सुखी, स्वस्थ रखें, प्रभु चरणों में यही कामना.

मनीष चंद्रभानजी दारा

सुख्यात व्यवसायी और संचालक,बालाजी ब्लड बैं क, अमरावती.

शुभेच्छुक - मनीष दारा मित्र परिवार, लायन्स परिवार के पदाधिकारी तथा सभी सदस्य, विदर्भ स्वाभिमान परिवार,अमरावती.

वृक्षमाता तुलसी गौड़ा नहीं रही,पीएम मोदी ने जताया दुःख

पर्यावरण सेवा के लिए मिले थे कई पुरस्कार

हलक्की आदिवासी समुदाय से थी, पद्मश्री सहित कई पुरस्कार से सम्मानित थीं

करवार- पद्मश्री से सम्मानित, वृक्ष माता कही जाने वाली तुलसी गौड़ा का सोमवार को निधन हो गया. राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सहित कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सामने उन्होंने नंगे पैर और आदिवासी वेशभूषा में पद्मश्री सम्मान हासिल किया था.तुलसी गौड़ा हलक्की समुदाय से आती थीं. वह 86 साल की थीं और वृद्धावस्था संबंधी बीमारियों से पीड़ित थीं.गृह गांव हंनाली में उन्होंने अंतिम सांस ली

सोमवार को उत्तर कन्नड़ जिले के अंकोल तालुक स्थित गृह गांव हंनाली में उन्होंने अंतिम सांस ली. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तुलसी गौड़ा के निधन पर शोक व्यक्त किया और कहा कि वह पर्यावरण संरक्षण के लिए मार्गदर्शक बनी रहेंगी. गौरतलब है कि तुलसी गौड़ा ने छोटी उम्र में ही वन विभाग की पौध नर्सरी में काम करना शुरू कर दिया था. बचपन में वह अक्सर नर्सरी जाया करती थीं.पौधे लगाना उन्हें बहुत ज्यादा पसंद था. इस काम को वह बड़े आनंद के साथ करती थीं. अंकोला और उसके आसपास के इलाकों में हजारों पेड़ लगाए गए हैं, जिसका श्रेय तुलसी गौड़ा को जाता है. उनकी ओर से लगाए गए कई पौधे वर्षों बीतने के बाद काफी बड़े हो गए हैं. वह पद्मश्री के अलावा इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र पुरस्कार से भी सम्मानित हुई थीं.

तुलसी गौड़ा एक आम आदिवासी

महिला थीं, जो कर्नाटक के होनाल्ली गांव में रहती थीं. वह कभी स्कूल नहीं गईं और ना ही उन्होंने किसी तरह का किताबी ज्ञान ही लिया, लेकिन प्रकृति से अगाध प्रेम तथा जुड़ाव की वजह से उन्हें पेड़-पौधों के बारे में अद्भुत ज्ञान था.उनके पास भले ही कोई शैक्षणिक डिग्री नहीं थी, लेकिन प्रकृति से जुड़ाव के बल पर उन्होंने वन विभाग में नौकरी भी की. चौदह वर्षों की नौकरी के दौरान उन्होंने हजारों पौधे लगाए जो आज वृक्ष बन गए हैं. रिटायरमेंट के बाद भी वे पेड़- पौधों को जीवन देने में जुटी रहीं. अपने जीवनकाल में अब तक उन्होंने एक लाख से भी अधिक पौधे लगाए.आमतौर पर एक सामान्य व्यक्ति अपने संपूर्ण जीवनकाल में एकाध या दर्जन भर से अधिक पौधे नहीं लगाता, लेकिन तुलसी को पौधे लगाने और उसकी देखभाल में अलग किस्म का आनंद मिलता था. तुलसी गौड़ा की खासियत थी कि वह केवल पौधे लगाकर ही अपनी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो जाती थीं, अपितु पौधरोपण के बाद एक पौधे की तब तक देखभाल करती थीं, जब तक वह अपने बल पर खड़ा न हो जाए. वह पौधों की अपने बच्चे की तरह सेवा करती थीं. वह पौधों की बुनियादी जरूरतों से भलीभांति परिचित थीं. उन्हें पौधों की विभिन्न प्रजातियों और उसके आयुर्वेदिक लाभ के बारे में भी गहरी जानकारी थी. पौधों के प्रति इस अगाध प्रेम को समझने के लिए उनके पास प्रतिदिन कई लोग आते थे.

पर्यावरण संरक्षण का भाव उन्हें विरासत में मिला- आदिवासी समुदाय से संबंध रखने के कारण पर्यावरण संरक्षण का भाव उन्हें विरासत में मिला. दरअसल धरती पर मौजूद जैव-विविधता को संजोने में आदिवासियों की प्रमुख भूमिका रही है. वे सदियों से प्रकृति की रक्षा करते हुए उसके साथ साहचर्य स्थापित कर जीवन जीते आए हैं. जन्म से ही प्रकृति प्रेमी आदिवासी लालच से इतर प्राकृतिक उपदानों का उपभोग करने के साथ उसकी रक्षा भी करते हैं. आदिवासियों की संस्कृति और पर्व-त्योहारों का पर्यावरण से घनिष्ट संबंध रहा है. यही वजह है कि जंगलों पर आश्रित होने के बावजूद पर्यावरण संरक्षण के लिए आदिवासी सदैव तत्पर रहते हैं. पौधारोपण के क्षेत्र में उनका कार्य महान था. कई पुरस्कार उन्हें मिले थे. सादगी की मूर्ति थीं.

छा गई श्रीदेवी की बेटी

श्रीदेवी की छोटी बेटी खुशी कपूर अपने फैशन और स्टाइल को लेकर अक्सर चर्चा में रहती हैं. इस बार मौका था उनकी बेस्ट फ्रेंड आलिया कश्यप की शादी का. आलिया कश्यप, जो मशहूर निर्देशक अनुराग कश्यप की बेटी हैं, ने 11 दिसंबर को शादी रचाई. इस शादी में बॉलीवुड की कई हस्तियां पहुंचीं, लेकिन सबकी नजरें खुशी कपूर पर टिक गईं.

ब्लॉक किराए से देना है

अकोली रोड स्थित छाया कॉलोनी में सभी सुविधायुक्त हॉल तथा किचन युक्त ब्लॉक किराए से देना है. इच्छुक निम्न मोबाइल पर संपर्क करें. छात्राओं को प्राथमिकता.

मोबाइल नंबर
9423426199,
8855019189

उपाध्याय ड्रायफ्रूट्स एन्ड फुडस्,जवाहर रोड के भीतर,अमरावती

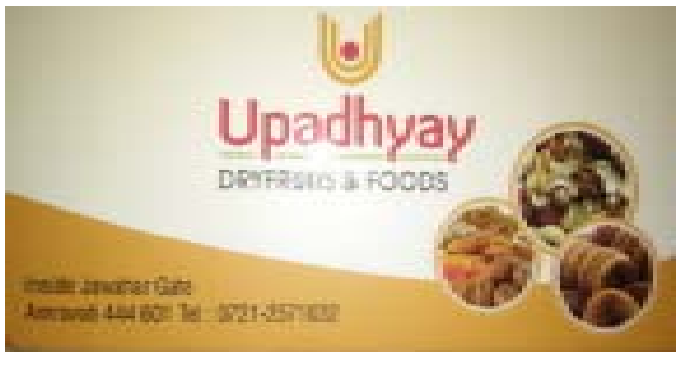

ज़वाहर रोड के
भीतर,अमरावती.

गुरूवार 12 से 18 दिसंबर 2024

मेष

इस सप्ताह छोटा सा प्रयास भी आपको सफलता दिलाने का काम कर सकता है. ऐसे में समझदारी से काम करना उचित है.वाहन धीरे से चलाएं, विवाद टालें.

वृषभ

भावी योजनाओं के लिए पूरी ईमानदारी से काम करेंगे. दूसरों की भावनाओं का सम्मान करेंगे.रिश्तों में चल रही गलतफहमी दूर होगी.नाहक किसी से विवाद से बचना श्रेयस्कर रहेगा.

मिथुन

थोड़ी सी मेहनत भी आपको कामयाबी दिला सकती है. रिश्तों में विवाद टाले. अपनों के बारे में चिंता की संभावना है.यह स्थिति कैरियर के लिए नुकसानदेह हो सकती है. छात्रों को स्पर्धा परीक्षा के लिए की गई मेहनत का पूरा फायदा मिलने वाला है.

कर्क

दिखावे के चक्कर में कर्ज का बोझ बढ़ाने से बचें . आपसी सहमति नहीं बनने से कार्यस्थल पर विरोधाभासी स्थिति बन सकती है. धार्मिक यात्रा हो सकती है.

सिंह

सप्ताह खुशियों वाला रहेगा. नाहक के विवाद से बचने का प्रयास करना श्रेयस्कर होगा. लीक से हटकर चलना फिलहाल जोखिमपूर्ण है.

कन्या

विरोधी साजिश में फंसाने का प्रयास कर सकते हैं. ऐसे में सतर्कता बरतना जरूरी है. संयम से काम लेना उचित रहेगा.

तुला

घर और कार्यालय के बीच तालमेल बिठाना जरूरी होगा. किसी से विवाद नहीं करना ही इस समय श्रेयस्कर है.

वृश्चिक

दूसरों को प्रभावित करने के लिए स्वभाव में बदलाव का प्रयास करेंगे. निश्चित कामों में सफलता मिलने की संभावना है.प्रयासों की निरंतरता जरूरी.

धनु

गुस्से से बना बनाया काम बिगड़ सकता है. विनयशीलता और प्रेम से काम लेने का प्रयास करें. वाहनादि धीरे से चलाएं.

मकर

घर के बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर ध्यान दें. समय रहते कदम उठाना उचित रहेगा. अपनों से विवाद टालें. ठंड बढ़ने से स्वास्थ्य संबंधी समस्या पैदा हो सकती है. संबंधों पर विशेष ध्यान दें.

कुंभ

आपकी समझदारी से कई समस्याओं का समाधान होगा. यह समझने का प्रयास करें. समझदारी,विनम्रता से सभी काम बनते जाएंगे. नाहक तनाव लेने से बचें.अपनों का साथ मिलना श्रेयस्कर रहेगा. समय का महत्व समझें.

मीन

इस राशि के लोगों के लिए यह सप्ताह बेहतरीन फलदायी रहने वाला है. आपका हर काम इस दौरान सफलता दिलाने वाला होगा. विवाद से बचना होगा. वाहन धीरे से चलाना ठीक रहेगा.

जिले के विकास के बारे में चिंतन कौन करेगा

अहंकार कर रहा है विकास का सत्यानाश, शानदार सफलता के बाद भी नहीं मिला कैबिनेट मंत्री पद

विदर्भ स्वाभिमान, 18 दिसंबर

अमरावती-अमरावती जिले के सर्वांगीण विकास क़ो कुछ साल से ग्रहण लग गया है. उड़ान पुल बनने तथा शुरू होने के बाद से शुरू यह ग्रहण खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा है. नेताओं का अहंकार जनता की समस्याओं पर भारी पड़ रहा है. मैं नहीं तो वह भी नहीं, वाली मानसिकता के कारण फिर एक बार अमरावती जिला पालकमंत्री से वंचित हो गया. पालकमंत्री के रूप में कौन थोपा जाएगा, यह तो बाद में पता चलेगा लेकिन हैरत इस बात को लेकर है कि नेताओं की आपसी लड़ाई के कारण जिले को आज संभागीय मुख्यालय रहने के बाद भी वंचित पड़ रहा है. विकास में नागपुर कहां चला गया है और अमरावती कितना पिछड़ गया है, यह किसी को बताने की जरूरत नहीं है. संभागीय मुख्यालय की स्थिति आज काटो तो खून नहीं है. इतवारा बाजार क्षेत्र का उड़ान पुल कितने दिनों में बनेगा, यह जहां कोई नहीं बता सकता है, वहीं दूसरी ओर बडनेरा विधानसभा क्षेत्र में कम समस्याएं नहीं हैं. सवाल यह है कि क्या जो लोग जनप्रतिनिधियों को अपने दुःख दर्द को दूर करने तथा विकास को गति देने, बेरोजगारी कम करने, बेलोरा हवाई अड्डे को गति प्रदान करने के उद्देश्य से चुन कर देते हैं, उनका मानभंग नहीं हो रहा है. जिले में नेताओं के बीच पहले भी मतभेद होते थे लेकिन उस समय जिले के विकास पर कोई असर नहीं पड़ता था. लेकिन पिछले कुछ वर्षों के दौरान जो जनता इन्हें राजा बनाती है, उसके लिए भी यह नहीं सोचते हैं. अगर सभी विधायकों में एकता हो तो जिले में दो-दो सांसद, 10 विधायक रहने के बाद तो सरकार से हर बात मनवाई जा सकती है लेकिन दुर्भाग्य की बात कि राजनीति तिकड़म में सभी ऐसे उलझे हैं कि उसे मंत्री बनाया तो इसे नहीं चलेगा, इसे बनाया तो उसे नहीं चलेगा वाली नीति के कारण जिले के विकास का सत्यानाश हो रहा है, इससे नेताओं को कोई लेना-देना नहीं है. क्या इसके लिए ही लोगों ने इन्हें अपना विधायक चुना है. बेलोरा हवाई अड्डे का काम केवल निरीक्षण और अन्य कामों तक ही चल रहा है.

जिले के दो-तीन अधिकारियों ने नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया कि एक काम का प्रस्ताव रखता है, दूसरा विरोध करता है, तीसरे इससे हटकर ही आयडिया रखने क़े कारण वे स्वयं परेशान हैं. आज शहर में अनगिनत समस्याएं हैं, शहर के बीच से गुजरने वाले लोकनिर्माण विभाग के रास्ते लोगों के लिए मौत का कारण बने हैं लेकिन इस पर किसी का ध्यान नहीं है. जो सीनियर हैं वह तो सीनियर रहने के बाद जिले की विभिन्न समस्याओं को लेकर गंभीर होना चाहिए. जिले में पालकमंत्री कौन होगा, इस पर जहां सभी की नजरें लगी हैं, वहीं दूसरी ओर यह भी उतना ही सच है कि विगत कुछ वर्षों से राजनीति में जनता की बजाय हमारा स्थान, हमारा अहंकार बढ़ा हुआ दिखाई दे रहा है. केवल दिखावे की नौटंकी जिले में चलने की चर्चा आम आदमी तथा पढ़ा-लिखा मतदाता भी यही सवाल कर रहा है. जिले में दो-दो सांसद रहने के बाद भी अभी तक बेलोरा का काम नहीं हुआ. मेलघाट में कुपोषण की स्थिति त्रस्त कर रही है, आदिवासी विभाग में योजनाओं की कमी के साथ अनगिनत समस्याएं त्रस्त कर रही हैं. जिले में महायुति को शानदार सफलता के बाद उम्मीद थी कि जिले का पालकमंत्री मिलेगा लेकिन दुर्भाग्य की बात कि फिर एक बार वह भी हाथ से निकल गया. यह निकलने के पीछे के कारण स्थानीय नेताओं का अहंकार नहीं तो और क्या हो सकता है. सभी एक-दूसरे को फूटी आंखों नहीं सुहाते हैं. साथ रहने के बाद भी साथ का दिखावा, पीछे से कब्र खोदने का काम करते हैं. स्थिति यह है कि लोग अब खुले में कहने लगे हैं कि संभागीय मुख्यालय रहने के बाद भी नेताओं ने जिले के विकास को रसातल में डाल दिया है. सभी को कोई गिला नहीं है, मेरा अहंकार और मैं कैसे बड़ा हूं,दूसरा कैसा छोटा है, केवल इस पर ही नेताओं का पूरा ध्यान लगा है. ऐसा नहीं रहता तो निश्चित तौर पर हमारे अमरावती शहर का चित्र अलग रहता और संभाग में यह विकास में सबसे आगे रहने वाली स्थिति रहती. लोग भड़के उससे पूर्व संभलना अच्छा है.

गुणवत्ता विश्वसनीयता तत्पर सेवा

शालेय, महाविद्यालयीन पाठ्य पुस्तक, सामान्य ज्ञान स्पर्धा की विभिन्न किताबे, रजिस्टर, नोटबुक्स, कम्पास सहित सभी प्रकार की फाइलें,बुक्स, स्टेशनरी का एकमात्र विश्वसनीय स्थान. रियायती कीमत तथा तत्पर सेवा ही हमारी विशेषता है.

--संपर्क--

प्रथमेश बुक व जनरल स्टोअर्स, रविनगर चौक, अमरावती.

सन् 1967 पासून
अमरावती शहरात वाजवी दरात सर्वात जास्त प्लाटस्चे सौदे करणारे एकमेव इस्टेट एजंट
संजय एजंसीज्
टाऊन हॉल समोर, नेहरू मैदान,अमरावती.फोन

राजपुरोहित स्टुडियो
फोटोग्राफी की आधुनिकतम साज-सज्जा के साथ ही रियायती कीमत में बेहतरीन गुणवत्ता क़ी विडियो शूटिंग के लिए शहर ही नहीं तो समूचे विदर्भ में एकमात्र विश्वसनीय केन्द्र.फोटोग्राफी, विडियो शूटिंग के साथ अलबम के काम किए जाते हैं.
राजपुरोहित फोटो स्टुडियो
शारदा नगर, रघुवीर मोटर्स के पास,अमरावती.अमरावती.
मो.9028123251

हर गुरूवार नियमित पढ़िये विदर्भ स्वाभिमान

घर का सपना आपका, पूरा करने में योगदान करते हैं हम

थोक की दर में निर्माण साहित्य का विश्वसनीय स्थान